

Faizane Jumadal Ula w Jumadal Ukhra (Hindi)

हफ्तावार रिमाला : 325

Weekly Booklet : 325

# फैज़ाने

जुमादल ऊला व जुमादल उख़्रा

सफ़्हात 17



- दुरुस्त नाम और सहीह तलफ़्फुज़ 02
- साल भर तंगदस्ती से हिफ़ाज़त 05
- मोमिन का मौसिमे बहार 09
- नेक वज़ीर 15

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ ط  
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

## फैज़ाने जुमादल ऊला व जुमादल उख़्रा<sup>(1)</sup>

दुआए अत्तार : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 15 सफ़हात का रिसाला :  
 “फैज़ाने जुमादल ऊला व जुमादल उख़्रा” पढ़ या सुन ले उसे इस्लामी  
 महीनों का अदब नसीब कर और उस की मां बाप समेत बे हिसाब मग़िफ़रत  
 फ़रमा ।  
 آمین بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

### दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुसलमान जब तक मुझ पर  
 दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहता है, फ़िरिश्ते उस पर रहमतें भेजते रहते हैं, अब बन्दे की  
 मरज़ी है कम पढ़े या ज़ियादा ।  
 (अिन ماجه، 1/490، حدیث: 907)

बैठते, उठते, जागते, सोते हो इलाही ! मेरा शिआर दुरूद

(जौके ना'त, स. 124)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

### “जुमादल ऊला” और “जुमादल उख़्रा” नाम रखने की वजह

इस्लामी साल का पांचवां महीना “जुमादल ऊला” और छटा  
 “जुमादल उख़्रा” है । इस्लामी महीनों का तअल्लुक चूँकि चांद से है और  
 गर्दिशे चांद के सबब इन महीनों में मौसिम बदलता रहता है । एक मौसिम  
 किसी महीने में आता है तो अगले चन्द सालों में वोह मौसिम किसी और

①... येह रिसाला अल मदीनतुल इल्मिय्या की किताब “इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल” से  
 जुमादल ऊला और जुमादल उख़्रा के महीनों की मुनासबत से तय्यार किया गया है ।

(शो'बा हफ़तावार रिसाला मुतालअ़ा)

महीने में आ जाता है, इसी लिये मौसिम को इस्लामी महीनों के साथ खास नहीं कर सकते लेकिन जब इन महीनों के नाम रखे गए उस वक्त इस पांचवें और छठे महीने में इतनी सर्दी पड़ती थी कि पानी जम जाया करता था और जुमादा का मा'ना है “जम जाना” इसी मुनासबत से पांचवें महीने को “जुमादल ऊला” और छठे महीने को “जुमादल उख़ा” कहा जाने लगा ।

(तफ़ीर ابن كثير، التوبة، تحت الآية: 36/4/129)

## दुरुस्त नाम और सहीह तलफ़ुज<sup>(1)</sup>

लुग़त के ए'तिबार से इन दोनों महीनों के दुरुस्त नाम और सहीह तलफ़ुज़ येह हैं : जुमादल ऊला, जुमादल उख़ा और जुमादल आख़िरा ।

## जुमादल ऊला कैसे गुज़ारें ?

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** हमें अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये पूरा साल ही फ़राइज़ो वाजिबात की पाबन्दी के साथ साथ नफ़्ती इबादात का भी एहतियाम करना चाहिये क्यूं कि अल्लाह पाक अपने बन्दों के हर नेक अमल पर फ़ज़्लो करम की छमाछम बारिश बरसाता है, बिल खुसूस कुछ महीनों के मख़सूस अय्याम और उन की रातों में उस के दरियाए रहमत की रवानी मज़ीद बढ़ जाती है, उस की रहमत को पाने और शौक़े

①... मशहूर नहवी इमाम फ़राअ कहते हैं : كُلُّ الشُّهُورِ مُدَكَّرَةٌ إِلَّا جُمَادَيْنِ : या'नी तमाम महीनों के नाम मुज़क्कर हैं सिवाए दो जुमादी महीनों (या'नी जुमादल ऊला और जुमादल उख़ा या अल आख़िरह) के, इन दोनों के नाम मुअन्नस हैं । (اشمارة في علم التاريخ، ص 13)

जब लफ़ज़ “जुमादा” मुअन्नस है तो इस की सिफ़त भी मुअन्नस ही ज़िक्र की जाएगी इसी लिये “जुमादल अब्वल” और “जुमादल आख़िर” न कहा जाए क्यूं कि “अल अब्वल” और “अल आख़िर” मुज़क्कर हैं बल्कि “जुमादल ऊला” और “जुमादल उख़ा” कहना चाहिये । ऐसे ही छठे महीने को “जुमादस्सानी” भी न कहा जाए क्यूं कि सानी वहां आता है जहां उस के बा'द सालिस (तीसरा) भी हो, जब कि यहां तीसरा नहीं । (غياث اللغات، باب الجهم، ص 194-195)

इबादत बढ़ाने के लिये उन में मख़सूस इबादात और अवरारदो वज़ाइफ़ पर अज़्रो सवाब की बिशारतें दी गई हैं। जुमादल ऊला के महीने में भी शौक़े इबादत बढ़ाने और ख़ूब ख़ूब अज़्रो सवाब कमाने के लिये बुजुर्ग़ाने दीन के मा'मूलात और उन से मन्कूल इबादात और कुछ अवरारदो वज़ाइफ़ यहां नक़ल किये जा रहे हैं, अल्लाह करीम से दुआ है कि हमें इस माहे मुकर्रम में अपनी रिज़ा व खुशानूदी के लिये ख़ूब ख़ूब इबादात करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

### पहली रात के नवाफ़िल

“जवाहिरे ख़म्सा” में है कि जुमादल ऊला की पहली तारीख़ को सहाबए किराम رضي الله عنهم बीस रकअत नमाज़ पढ़ा करते थे और हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बा'द एक बार सूरए इख़्लास ﴿قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ﴾ पढ़ते। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द एक सो मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ते थे।

(जवाहर ख़म्से, स 21)

ख़लीफ़ए मुफ़्तये आ'जमे हिन्द, फ़ैज़े मिल्लत, हज़रते अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद फ़ैज़ अहमद उवैसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : **إِنْ شَاءَ اللهُ** : इस नमाज़ की बरकत से अल्लाह पाक बे शुमार नमाज़ों का सवाब अता करेगा।

(इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 65)

“जवाहिरे ख़म्सा” में है : पहली रात दो रकअत इस तरह अदा करे कि पहली रकअत में सूरए फ़ातिहा के बा'द सूरए जुमुअह और दूसरी में सूरए मुज़्ज़म्मिल पढ़े।

(जवाहर ख़म्से, स 21)

जो इस महीने की पहली रात और पहले दिन चार रकअत नमाज़ पढ़े और हर रकअत में (सूरए फ़ातिहा के बा'द) ग्यारह मरतबा सूरए इख़्लास

﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ पढ़े तो अल्लाह पाक 90 साल की इबादत उस के नामए आ'माल में लिखने का हुक्म देता है और 90 हज़ार साल की बुराइयां उस के नामए आ'माल से मिटा देता है। (जोहर शैबी, स. 618)

हज़रते अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद फ़ैज़ अहमद उवैसी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि पहली तारीख़ को बा'द नमाज़े मग़रिब 8 रकअत नमाज़ चार सलाम से पढ़नी है, पहली और दूसरी रकअत में सूराए फ़ातिहा के बा'द सूराए इख़लास ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ ग्यारह ग्यारह मरतबा पढ़े। यह नमाज़ बहुत अफ़ज़ल है और इस के पढ़ने से إِنَّ شَاءَ اللَّهُ बे शुमार इबादात का सवाब पाक परवर्दगार की तरफ़ से अता किया जाएगा। (इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 65)

### तीसरी रात के नवाफ़िल

“जवाहिरे ख़म्सा” में है : तीसरी रात को बीस रकअत दस सलाम से पढ़े और हर रकअत में सूराए फ़ातिहा के बा'द दस दस बार सूराए क़द्र पढ़े। नमाज़ के बा'द सुब्ह तक यह तस्बीह पढ़ता रहे : يَاعْظِيمُ تَعَظَّمْتَ بِعَظَمَتِكَ وَالْعَظَمَةُ فِي عَظَمَتِكَ يَاعْظِيمُ (तरजमा : ऐ अज़मत वाले ! तू अपनी बड़ाई के सबब अज़मत वाला है और ऐ अज़मत वाले ! हकीकी बड़ाई तेरी ही बड़ाई है।) (जोहर शम्से, स. 21)

### सत्ताईसवीं रात के नवाफ़िल

“जवाहिरे ख़म्सा” में है : इस माह की सत्ताईसवीं तारीख़ को 8 रकअतें दो सलाम से पढ़िये और हर रकअत में सूराए फ़ातिहा के बा'द सूराए वहुहा एक एक बार पढ़िये फिर यह तस्बीह पढ़िये : “سُبُّوْهُ قُدُّوْهُ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوْحِ” (तरजमा : पाक है, बे ऐब है फ़िरिशतों और रूह का रब।) (जोहर शम्से, स. 22-23-24-25-26-27-28-29-30-31-32-33-34-35-36-37-38-39-40-41-42-43-44-45-46-47-48-49-50-51-52-53-54-55-56-57-58-59-60-61-62-63-64-65-66-67-68-69-70-71-72-73-74-75-76-77-78-79-80-81-82-83-84-85-86-87-88-89-90-91-92-93-94-95-96-97-98-99-100-101-102-103-104-105-106-107-108-109-110-111-112-113-114-115-116-117-118-119-120-121-122-123-124-125-126-127-128-129-130-131-132-133-134-135-136-137-138-139-140-141-142-143-144-145-146-147-148-149-150-151-152-153-154-155-156-157-158-159-160-161-162-163-164-165-166-167-168-169-170-171-172-173-174-175-176-177-178-179-180-181-182-183-184-185-186-187-188-189-190-191-192-193-194-195-196-197-198-199-200-201-202-203-204-205-206-207-208-209-210-211-212-213-214-215-216-217-218-219-220-221-222-223-224-225-226-227-228-229-230-231-232-233-234-235-236-237-238-239-240-241-242-243-244-245-246-247-248-249-250-251-252-253-254-255-256-257-258-259-260-261-262-263-264-265-266-267-268-269-270-271-272-273-274-275-276-277-278-279-280-281-282-283-284-285-286-287-288-289-290-291-292-293-294-295-296-297-298-299-300-301-302-303-304-305-306-307-308-309-310-311-312-313-314-315-316-317-318-319-320-321-322-323-324-325-326-327-328-329-330-331-332-333-334-335-336-337-338-339-340-341-342-343-344-345-346-347-348-349-350-351-352-353-354-355-356-357-358-359-360-361-362-363-364-365-366-367-368-369-370-371-372-373-374-375-376-377-378-379-380-381-382-383-384-385-386-387-388-389-390-391-392-393-394-395-396-397-398-399-400-401-402-403-404-405-406-407-408-409-410-411-412-413-414-415-416-417-418-419-420-421-422-423-424-425-426-427-428-429-430-431-432-433-434-435-436-437-438-439-440-441-442-443-444-445-446-447-448-449-450-451-452-453-454-455-456-457-458-459-460-461-462-463-464-465-466-467-468-469-470-471-472-473-474-475-476-477-478-479-480-481-482-483-484-485-486-487-488-489-490-491-492-493-494-495-496-497-498-499-500-501-502-503-504-505-506-507-508-509-510-511-512-513-514-515-516-517-518-519-520-521-522-523-524-525-526-527-528-529-530-531-532-533-534-535-536-537-538-539-540-541-542-543-544-545-546-547-548-549-550-551-552-553-554-555-556-557-558-559-560-561-562-563-564-565-566-567-568-569-570-571-572-573-574-575-576-577-578-579-580-581-582-583-584-585-586-587-588-589-590-591-592-593-594-595-596-597-598-599-600-601-602-603-604-605-606-607-608-609-610-611-612-613-614-615-616-617-618-619-620-621-622-623-624-625-626-627-628-629-630-631-632-633-634-635-636-637-638-639-640-641-642-643-644-645-646-647-648-649-650-651-652-653-654-655-656-657-658-659-660-661-662-663-664-665-666-667-668-669-670-671-672-673-674-675-676-677-678-679-680-681-682-683-684-685-686-687-688-689-690-691-692-693-694-695-696-697-698-699-700-701-702-703-704-705-706-707-708-709-710-711-712-713-714-715-716-717-718-719-720-721-722-723-724-725-726-727-728-729-730-731-732-733-734-735-736-737-738-739-740-741-742-743-744-745-746-747-748-749-750-751-752-753-754-755-756-757-758-759-760-761-762-763-764-765-766-767-768-769-770-771-772-773-774-775-776-777-778-779-780-781-782-783-784-785-786-787-788-789-790-791-792-793-794-795-796-797-798-799-800-801-802-803-804-805-806-807-808-809-810-811-812-813-814-815-816-817-818-819-820-821-822-823-824-825-826-827-828-829-830-831-832-833-834-835-836-837-838-839-840-841-842-843-844-845-846-847-848-849-850-851-852-853-854-855-856-857-858-859-860-861-862-863-864-865-866-867-868-869-870-871-872-873-874-875-876-877-878-879-880-881-882-883-884-885-886-887-888-889-890-891-892-893-894-895-896-897-898-899-900-901-902-903-904-905-906-907-908-909-910-911-912-913-914-915-916-917-918-919-920-921-922-923-924-925-926-927-928-929-930-931-932-933-934-935-936-937-938-939-940-941-942-943-944-945-946-947-948-949-950-951-952-953-954-955-956-957-958-959-960-961-962-963-964-965-966-967-968-969-970-971-972-973-974-975-976-977-978-979-980-981-982-983-984-985-986-987-988-989-990-991-992-993-994-995-996-997-998-999-1000)

## जुमादल ऊला के रोज़े

हज़रते शाह कलीमुल्लाह शाह जहांआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فرमाते हैं :  
इस महीने की दूसरी, बारहवीं और इक्कीसवीं को रोज़ा रखने का बहुत  
सवाब है । (मरते क़ैसी, स 199-जुवाहर नैसी, स 618)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❁❁❁ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

## जुमादल उख़्रा कैसे गुज़ारें ?

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** तमाम इस्लामी महीनों की तरह  
जुमादल उख़्रा भी बड़ी ख़ैरो बरकत का महीना है और इस माह की इबादत  
बहुत अफ़ज़ल है । येह महीना इस्तिक्बाले माहे रजब है गोया इस की इबादत  
का मक्सद माहे रजब की हुर्मत है । इस माहे मुबारक के मुतअल्लिक बुजुगानि  
दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم से मख़सूस इबादात व नवाफ़िल मन्कूल हैं जिन्हें अपना कर  
अल्लाह पाक की रिज़ा व खुशनूदी और इस महीने की बरकतें हासिल की  
जा सकती हैं ।

## जुमादल उख़्रा के रोज़े

जुमादल उख़्रा में रोज़ा रखने से मुतअल्लिक हज़रते शाह कलीमुल्लाह  
शाह जहांआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فرमाते हैं : इस महीने की पहली, पन्दरहवीं  
और आख़िरी तारीख़ को रोज़ा रखने का बहुत सवाब है । (मरते क़ैसी, स 199)

## पहली रात के नवाफ़िल

“जवाहिरे ख़म्सा” में है : जुमादल उख़्रा की पहली रात दो रकअत  
नमाज़ पढ़े और सलाम के बा’द ख़ूब इस्तिग़फ़ार करे । (जुवाहर नैसी, स 22)

## साल भर तंगदस्ती से हिफ़ाज़त

जो शख़्स बारह रकअतें छे सलाम से पढ़े और हर रकअत में सूराए  
फ़ातिहा के बा’द सूराए कुरैश ﴿لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ﴾ पढ़े और नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर

सूरए यूसुफ़ की तिलावत करे, अल्लाह करीम उसे तंगदस्ती और मुफ़िलसी से एक साल तक महफूज़ रखेगा । (जोअरुथ्मसे, स 22)

फ़ैजे मिल्लत, हज़रते अल्लामा मुफ़ती मुहम्मद फ़ैज़ अहमद उवैसी रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : बुजुगानि दीन (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ) से मन्कूल है कि इस महीने में जो शख़्स चार रक्अत नफ़ल अदा करे और हर रक्अत में (सूरए फ़ातिहा के बा'द) सूरए इख़्लास ﴿قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ﴾ तेरह (13) मरतबा पढ़े तो अल्लाह करीम उस के बे शुमार गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है और उस के नामए आ'माल में बहुत सी नेकियां दाख़िल फ़रमाता है ।

(इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 67)

### हुर्मतो अज़मत की बिशारत

फ़ैजे मिल्लत, हज़रते अल्लामा मुफ़ती मुहम्मद फ़ैज़ अहमद उवैसी रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : जो कोई जुमादल उख़्रा की इक्कीसवीं रात से आख़िरी तारीख़ तक हर रात बा'द नमाजे इशा बीस रक्अत नमाज़ दस सलाम से पढ़े और हर रक्अत में सूरए फ़ातिहा के बा'द सूरए इख़्लास ﴿قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ﴾ एक एक बार पढ़े, अल्लाह पाक उस नमाज़ के पढ़ने वाले को हुर्मतो अज़मत बख़शाता है । (इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 70)

“जवाहिरे ख़म्सा” में है : इक्कीसवीं रात से आख़िरी तारीख़ तक कई सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ हर रात बीस रक्अत नमाज़ पढ़ा करते थे ।

(जोअरुथ्मसे, स 22)

### आख़िरी अशरे के आ 'माल

कई सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ इस महीने के आख़िरी अशरे में इस्तिक्बाले रजबुल मुरज्जब के लिये रोज़े रखा करते थे । (जोअरुथ्मसे, स 22)

फ़ैज़े मिल्लत, हज़रते अल्लामा मुफ़्ती फ़ैज़ अहमद उवैसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فرमाते हैं : जुमादल उख़्रा की आख़िरी तारीख़ को रोज़ा रखना रजब शरीफ़ के इस्तिक्बाल के लिये मुस्तहूसन है ।

(इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 70)

हज़रते अल्लामा अब्दुरहमान इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ (वफ़ात : 597 हि.) फ़रमाते हैं : इन्सान को चाहिये कि रजब शरीफ़ की आमद से पहले इस्तिक्बाले रजब के लिये खुद को गुनाहों से पाक साफ़ करे, अपनी हर ख़ता अपने हर गुनाह पर नादिमो शरमिन्दा हो कर अल्लाह पाक की बारगाह में तौबा करे और तौबा के ज़रीए अपने दिल को गुनाहों की गन्दगी से पाक कर ले ।

(النور في فضائل الايام والشهور، ص 129)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❁❁❁ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

## जुमादल ऊला और उख़्रा की मुतफ़रिक् इबादात

बा'ज नेकियां ऐसी हैं कि जिन के ज़रीए हर माह अन्नो सवाब कमाया जा सकता है । फ़राइज़ की पाबन्दी के साथ साथ जुमादल ऊला और जुमादल उख़्रा में इन नेकियों का भी एहतियाम कीजिये और अल्लाह पाक की ख़ूब रहमतें और बरकतें हासिल कीजिये ।

## रोज़े के लिये महीने के अफ़ज़ल अय्याम

हज़रते इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ हर महीने के अफ़ज़ल दिनों के बारे में फ़रमाते हैं : महीने का पहला, दरमियानी और आख़िरी दिन और दरमियान में अय्यामे बीज या'नी चांद की तेरह, चौदह और पन्दरह तारीख़ । येह फ़ज़ीलत वाले अय्याम हैं, इन में रोज़े रखना और ब कसरत ख़ैरात करना मुस्तहब है ताकि इन अवक़ात की बरकत से इस का अन्न दुगना (डबल) हो ।

(احياء العلوم، 1/318 متقطاً)



हज़रते अबू ज़र رَضِيَ اللهُ عَنْهُ रिवायत करते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! जब तुम हर महीने तीन रोज़े रखो तो तेरहवीं, चौदहवीं और पन्दरहवीं के रखो । (ترمذی، 2/193، حدیث: 761)

हज़रते अबू उस्मान नहदी رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं सात रोज़ तक हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ का मेहमान रहा । मैं ने पूछा : “ऐ अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ! आप किस तरह रोज़े रखते हैं या आप के रोज़े कैसे होते हैं ?” फ़रमाया : “मैं हर महीने के आगाज़ में तीन रोज़े रखता हूँ और अगर कोई अरिज़ा पेश आ जाता है तो महीने के आख़िर में तीन रोज़े रख लेता हूँ ।”

(مسند احمد، 3/268، حدیث: 8641 مختصراً)

## महीने भर का सवाब

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ की बारगाह में अर्ज़ की गई : “अय्यामे बीज में रोज़ा रखने से महीने भर का सवाब मिलता है ?” इर्शाद फ़रमाया : “हां ! पहली, दूसरी, तीसरी या तेरह, चौदह, पन्दरह या सत्ताईस, अठ्ठाईस, उन्तीस इन में से जिस में रोज़ा रखे सब का सवाब बराबर है ।” (मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 419)

एक रिवायत में है कि सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हमें अय्यामे बीज के तीन रोज़े रखने का हुक्म दिया करते और फ़रमाया करते : येह एक महीने के रोज़ों के बराबर है । (नस़ी، ص 397، حدیث: 2427)

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हर महीने के अय्यामे बीज में रोज़े रखने की तरगीब इर्शाद फ़रमाई है और बुजुगानि दीन ने हर महीने रोज़ों के लिये अफ़ज़ल अय्याम बयान फ़रमाए हैं इस लिये हमें चाहिये कि इन महीनों में भी रोज़े रखें ताकि ख़ूब रहमतें और बरकतें हासिल हों ।

## मोमिन का मौसिमे बहार

शुरूअ में बताया गया है कि जब महीनों के नाम रखे गए तो उस दौरान पांचवें और छठे कमरी महीने में बहुत ज़ियादा सर्दी हुवा करती थी जिस की वजह से पांचवें का नाम जुमादल ऊला और छठे महीने का नाम जुमादल उख़्रा रखा गया। इसी मुनासबत से यहां सर्दियों में की जाने वाली नेकियों के हवाले से बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ के चन्द अक्वाल और उन के वाकिआत नक्ल किये जा रहे हैं।

### रोज़ा रखिये और कियाम कीजिये

सर्दी हो या गर्मी ! हर मौसिम इबादत का मौसिम है लेकिन सर्दियों में कम वक़्त में ज़ियादा सवाब कमाना निस्बतन आसान है क्यूं कि सर्दियों के दिन छोटे होते हैं, रातें लम्बी और मौसिम ठन्डा रहता है। जैसा कि हुजूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : मौसिमे सरमा मोमिन के लिये बहार का मौसिम है कि इस में दिन छोटे होते हैं तो मोमिन उन में रोज़ा रखता है और उस की रातें लम्बी होती हैं तो वोह उन में कियाम करता (यानी नफ़्ल पढ़ता) है।

(شعب الایمان، 3/416، حدیث: 3940)

सर्दी बन्दए मोमिन के लिये बहार का मौसिम इस लिये है कि वोह इस मौसिम में फ़रमां बरदारियों के बागात में चरता है और इबादतों के मैदानों में टहलता है नीज़ सर्दी में आसानी से अदा हो जाने वाले नेक आ'माल की क्यारियों में दिलो जान को ताज़ा करता है। जैसे मौसिमे बहार में चरागाह में जानवर चरते हैं और ख़ूब तन्दुरुस्त और फ़रबा हो जाते हैं यूंही मौसिमे सरमा में अल्लाह पाक ने अपनी इबादतों की जो आसानियां अता फ़रमाई हैं उन की बरकत से बन्दए मोमिन का दीनो ईमान भी फ़रबा हो जाता

है क्यूं कि जब सर्दी का मौसिम आता है तो बन्दए मोमिन भूक और प्यास की मशक्कत उठाए बिगैर ही दिन में रोज़ा रख सकता है कि दिन छोटा और सर्द होता है लिहाज़ा रोज़े की तकलीफ़ महसूस नहीं होती । (لطائف المعارف، ص 372)

## ठन्डी ग़नीमत

प्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया :

“सर्दी के रोज़े ठन्डी ग़नीमत हैं ।”

(ترمذی، 2/210، حدیث: 797)

इस की शर्ह में है : सर्दी के रोज़ों को ठन्डी ग़नीमत फ़रमाने की यह वजह है कि यह ऐसा माले ग़नीमत है जो किसी लड़ाई, थकावट या मशक्कत के बिगैर ही हाथ आ जाता है इसी लिये मुजाहिद इस ग़नीमत को आसानी से समेट लेता है । (لطائف المعارف، ص 372)

## इबादात में इज़ाफ़े का मौसिम

हमारे बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ मौसिमे सरमा की आमद पर खुश होते और इसे इबादात में इज़ाफ़े का मौसिम करार देते, जैसा कि हज़रते अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِيَ اللهُ عَنْهُ मौसिमे सरमा की आमद पर फ़रमाते : सर्दी को खुश आमदीद, इस में अल्लाह पाक की रहमतें नाज़िल होती हैं कि शब बेदारी करने वाले के लिये इस की रातें लम्बी और रोज़ादार के लिये दिन छोटा होता है । (مسند الفردوس، 4/164، حدیث: 6513)

इस फ़रमान की शर्ह में है : सर्दी की रातें लम्बी होती हैं लिहाज़ा यह मुम्किन होता है कि रात के एक हिस्से में आराम कर लिया जाए और फिर एक हिस्सा अल्लाह पाक की इबादात में गुज़ारा जाए । यूं बन्दए मोमिन नमाज़ पढ़ लेता है, कुरआने पाक का मख़सूस हिस्सा तिलावत कर लेता है और जिस्म को उस की ज़रूरत के मुताबिक़ नींद भी मिल जाती है इस तरह

सर्दियों की रातों में मुसलमान अपना दीनी फ़ाएदा भी हासिल कर लेता है और उस के जिस्म को राहत भी मिल जाती है। (لطائف المعارف، ص 372)

**सर्दियों में इबादत के मुतअल्लिक़ बुजुर्गाने दीन के अक्वाल**  
अल्लाह पाक के नेक बन्दे सर्दियों के अय्याम में इबादत को महबूब जानते थे।

हज़रते यहूया बिन मअज़ राज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : रात लम्बी है, उसे नींद से छोटा न करो और दिन पाकीज़ा है उसे गुनाहों से आलूदा न करो। (صفة الصّوّفة، 4/87)

हज़रते हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : सर्दी बन्दे मोमिन का कितना अच्छा ज़माना है ! रात लम्बी होती है, बन्दा रात में नमाज़ के लिये कियाम करता है और दिन छोटा होता है तो बन्दा रोज़ा रख लेता है।

(لطائف المعارف، ص 373)

जब सर्दी का मौसिम आता तो हज़रते उबैद बिन उमैर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते : ऐ कुरआन वालो ! तुम्हारे कुरआन पढ़ने के लिये रात लम्बी हो गई है लिहाज़ा कियाम में ख़ूब तिलावत करो और तुम्हारे रोज़े के लिये दिन छोटा हो गया है लिहाज़ा रोज़े रखो। (احاديث الشّاء، ص 98)

**घ्यारे घ्यारे इस्लामी भाइयो !** सर्दी की वजह से इबादात में सुस्ती मत कीजिये बल्कि सर्दी की मशक्कत पर सब्र कर के “أَفْضَلُ الْأَعْمَالِ أَحْضَرُهَا” या’नी अफ़ज़ल तरीन अमल वोह है जिस में मशक्कत ज़ियादा हो।” (431/1:34/ تحت الآية: البقرة، التفسير كبير،) पर अमल कीजिये और उन बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ को याद कीजिये जो सख़्त सर्दियों में सारी रात अल्लाह करीम की इबादत में गुज़ार देते, नींद को दूर करने के लिये ठण्डे पानी से वुजू फ़रमाते। चुनान्चे

## सर्दियों में बुजुर्गाने दीन की इबादात की हिकायात

﴿1﴾ हज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : हज़रते सफ़वान बिन सुलैम जोहरी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ सर्दियों में छत पर और गर्मियों में घर के अन्दर नमाज़ पढ़ते और सुब्ह तक सर्दी व गर्मी की वज्ह से बेदार रहते और बारगाहे इलाही में अर्ज़ गुज़ार होते : ऐ **अल्लाह** पाक ! येह सफ़वान की तरफ़ से कोशिश है और तू ज़ियादा जानता है । (3645: رقم، 186/3، حلیة الاولیاء، ص)

﴿2﴾ हज़रते सफ़वान और दीगर बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ सर्दी की रातों में एक कपड़े में नमाज़ पढ़ते थे ताकि सर्दी से नींद भागती रहे । कुछ बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ को इबादात में नींद आने लगती तो पानी में गो़ता लगा लेते और फ़रमाते : येह पानी (दोज़ख़ियों के) पीप के पानी से हलका है । (375: ص، لطائف المعارف، ص)

## फ़िक्रे आख़िरत का एक अन्दाज़

﴿3﴾ हज़रते जुबैद यामी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ एक रात तहज्जुद के लिये उठे, वुजू के लोटे में हाथ डाला तो पानी बहुत ठन्डा था और सर्दी की शिद्दत से जमने के क़रीब था । ठन्डक महसूस हुई तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ को जहन्नम की जम्हरीर<sup>(1)</sup> याद आ गई, सारी रात यूंही गुज़र गई और सुब्ह तक आप ने लोटे से हाथ न निकाला । सुब्ह आप की कनीज़ आई तो आप इसी कैफ़ियत में थे, कनीज़ बोली : जनाबे वाला ! आप को क्या हो गया है ? आप ने मा'मूल के मुताबिक़ गुज़शता रात नमाज़े तहज्जुद भी नहीं पढ़ी और यहां वैसे ही बैठे हुए हैं । हज़रते जुबैद यामी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक तुम पर रहम फ़रमाए, हुवा येह कि मैं ने लोटे में हाथ डाला तो पानी की ठन्डक से

①... जम्हरीर शदीद क़िस्म की ठन्डक है जो कुपफ़ार को अज़ाब देने के लिये तय्यार की गई है । (283/2، التمهيد فی غریب الاثر، ص) येह अपनी ठन्डक से यूं जलाती है जैसे आग अपनी गरमी से जलाती है । (47/4، 57: تحت الآية، ص)

तक्लीफ़ हुई फिर मुझे ज़म्हरीर याद आ गई, खुदा की क़सम ! तुम्हारे यहां आने तक भी मुझे इस पानी की ठन्डक महसूस न हुई । (صفحة الصفوة، 3/64)

﴿4﴾ हज़रते दावूद बिन रुशैद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : एक शख़्स किसी सर्द रात में नमाज़ की ख़ातिर वुजू करने उठा, पानी बहुत ठन्डा महसूस हुवा, वोह रोने लगा, इतने में एक पुकार सुनाई दी : क्या तुम इस पर राज़ी नहीं ? कि हम ने लोगों को सुला दिया और तुम्हें उठाया, तुम यूं रोना रो रहे हो !

(لطائف المعارف، ص 374)

﴿5﴾ हज़रते अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं एक सर्द रात मेहराब में था । सर्दी ने बहुत परेशान कर दिया, मैं ने सर्दी के मारे एक हाथ छुपा लिया और दूसरा हाथ फैला रहा । इतने में मेरी आंख लग गई, कोई कहने वाला कह रहा था : ऐ अबू सुलैमान ! एक हाथ में हम ने रख दिया जो रखना था, अगर दूसरा हाथ भी होता तो उस में भी ज़रूर रखते । हज़रते अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : इस के बा'द मैं ने खुद से अहद कर लिया कि गर्मी हो या सर्दी हमेशा दोनों हाथ फैला कर ही दुआ करूंगा ।

(حلیة الاولیاء، 9/272، رقم: 13870)

## जिन के लिये सर्दी गर्मी बराबर थी

बा'ज बुजुगाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के लिये सर्दी और गर्मी बराबर होती थी । जैसा कि महबूबे परवर्दगार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते मौला अली शेरे खुदा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के लिये दुआ की, कि अल्लाह पाक उन से गर्मी और सर्दी दूर फ़रमा दे । चुनान्चे हज़रत मौलाए काएनात अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ सर्दी में मौसिमे गरमा के (बारीक) कपड़े ज़ेबे तन फ़रमाते और गर्मी में मौसिमे सरमा के (मोटे) कपड़ों को नवाज़ते । (حلیة الاولیاء، 9/272، رقم: 13870)

एक ताबेई बुजुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ को सर्दी में पानी से तहारत हासिल करने में बहुत तकलीफ़ होती थी, उन्होंने ने बारगाहे इलाही में दुआ की चुनान्वे (उन की दुआ मक़बूल हुई और) सर्दी के मौसिम में उन के पास पानी आता तो गर्म होने के सबब उस में भाप होती । (حلیة الاولیاء، 9/272، رقم: 13870)

हज़रते अबू सुलैमान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने सफ़रे हज़ के दौरान एक बुजुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ को देखा कि सख़्त सर्दी में बोसीदा कपड़े पहने हुए हैं और पसीने में शराबोर हैं । हज़रते अबू सुलैमान रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ को हैरत हुई, आप ने बुजुर्ग से हाल पूछा, उन्होंने ने फ़रमाया : गर्मी और सर्दी तो **अल्लाह** पाक की दो मख़्लूक़ात हैं, **अल्लाह** पाक हुक्म फ़रमाए कि सर्दी गर्मी मुझ पर छ जाएं तो मुझे सर्दी व गर्मी लग के रहें और अगर वोह रब्बे करीम हुक्म फ़रमाए तो सर्दी व गर्मी मेरे करीब भी न आएं । उन बुजुर्ग रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने मज़ीद फ़रमाया : मैं तीस साल से इस जंगल में हूँ, **अल्लाह** पाक मुझे सर्दी में अपनी महबबत की गर्माइश अता फ़रमाता है और गर्मी में अपनी महबबत की ठन्डक बख़्शता है । (لطائف المعارف، ص 376)

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** सर्दी के मौसिम में बहुत से लोग अपनी गुर्बत की वजह से घर वालों और बाल बच्चों के लिये सर्दी से बचाव के गर्म लिबास वगैरा ख़रीदने की ताक़त नहीं रखते, ऐसे में अगर हम उन की मदद कर दें तो इस में हमारे लिये अज़्रो सवाब है । “लताइफल मआरिफ़” में है कि सर्दी के मौसिम में ग़रीबों पर सर्दी दूर करने वाली चीज़ें ईसार करना बहुत फ़ज़ीलत वाला अमल है । (لطائف المعارف، ص 376)

### एक क़मीस के बदले जन्नत में दाख़िला

हज़रते सुलैमान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ का बयान है कि अहले शाम में से एक शख़्स ने आ कर कहा : मुझे हज़रते सफ़वान बिन सुलैम ज़ोहरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ

के बारे में बताओ, मैं ने उन्हें जन्नत में दाख़िल होते देखा है। पूछा गया : किस अमल के सबब ? उस ने बताया : किसी को एक क़मीस पहनाने के सबब। हज़रते सफ़वान बिन सुलैम जोहरी رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ से किसी ने उस क़मीस का तज़्किरा किया तो आप ने फ़रमाया : एक मरतबा मैं सख़्त सर्दी की रात में मस्जिद से निकला तो एक बरहना (बे लिबास) शख़्स पर नज़र पड़ी, मैं ने अपनी क़मीस उतार कर उसे पहना दी। (لطائف المعارف، ص 376)

### नेक वज़ीर

एक नेक वज़ीर को बताया गया कि एक औरत के चार यतीम बच्चे नंगे भूके हैं, वज़ीर ने एक आदमी को हुक्म दिया कि फ़ौरन जाओ और उन की ज़रूरत के कपड़े और खाना वग़ैरा उन्हें पहुंचाओ। फिर वज़ीर ने अपना (गर्म) लिबास उतार दिया और क़सम खाई कि बख़ुदा ! मैं तब तक लिबास न पहनूंगा और न ही कोई गर्माइश लूंगा, जब तक यह आदमी मुझे वापस आ कर बता न दे कि उन यतीमों को लिबास पहना दिये हैं और उन का पेट भर दिया है, चुनान्वे वोह आदमी चला गया और जब वापस आ कर बताया कि यतीमों ने कपड़े पहन लिये हैं और खाने से सैर हो गए हैं, तब नेक वज़ीर ने अपना (गर्म) लिबास दोबारा पहन लिया, नेक वज़ीर उस वक़्त सर्दी से कांप रहा था। (لطائف المعارف، ص 378)

अल्लाह पाक हमें भी ग़रीबों, यतीमों की ज़रूरिय्यात का ख़याल रखने और उन के साथ हुस्ने सुलूक करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और माहे जुमादल ऊला और जुमादल उख़्रा में मौसिम जैसा भी हो ख़ूब ख़ूब इबादतें करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ



## अगले हफ्ते का रिसाला

